International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 3; May 2018; Page No. 31-33

वर्तमान के सन्दर्भ में शेखर: एक जीवनी (पहला भाग) उपन्यास की प्रासंगिकता

डॉ. बिउटी दास

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, छैगांव कॉलेज, असम, भारत ।

सारांश

अज्ञेय कृत "शेखर: एक जीवनी" (पहला भाग) उपन्यास के क्षेत्र में उपन्यासकार की एक नवीनतम प्रयोग हैं। उपन्यासकार ने वाहियक दृश्टिकोण के बदले प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों के आंतरिक क्रिया-प्रतिक्रियाओं को बखुबी अभिव्यक्त करने का प्रयास किया हैं। अस्थिरता, अकेलापन, अजनबीपन, पीड़ा आदि ने आज के युवापीढ़ियों को घेरे रखा हैं। उपन्यास के केंद्रीय पात्र "शेखर" आज के युवापीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता हैं। उपन्यासकार ने पात्र के उन मनःस्थितियों को नई संवेदना से संरचना कर अपनी कलात्मकता का परिचय दिया हैं। शेखर कोई बड़ा आदमी तो नहीं हैं, वह आधुनिक तथा हमारे बीच का ही एक आम इंसान हैं। शेखर में ऐसा कोई आदर्श या नायक होने के विशेष गुण भी नहीं है जिसके सहारे नई पीढ़ी के लोग उसे अनुसरण करने के लिए प्रेरित हो और वह ऐसे कोई महान कार्य किया भी नहीं जिसके कारण समय के प्रवाहमान गति में उसके दस्तख़त को सदा सदा के लिए लोगों के स्मृति के पट पर बिराजमान रहे। मेरे शोध पत्र का उद्देश्य वर्तमान के सन्दर्भ में शेखर:एक जीवनी (पहला भाग) उपन्यास की प्रासंगिकता को अभिव्यक्त करना हैं।

मूल शब्द: अहं, भय, सेक्स, अस्थिरता, अकेलापन, जिज्ञासा।

प्रस्तावना

आज हम इक्कीसवीं शदी के आधुनिक मानव हैं। विज्ञान और प्रयुक्ति विद्या के अत्याधुनिक प्रयोगों ने मानव को ऊँचे शिखरों पर पहुँचा दिया हैं। भागदौड़ भरी जिंदेगी ने मानव को मशीनी यंत्र के रूप में परिवर्तित कर दिया हैं। फिर भी क्या हम जिंदगी से संतुस्ट हैं? क्या हमारी जिज्ञासाओं की पूर्णता हमें प्राप्त हुई हैं? इतने व्यस्ततापूर्ण होने के वाबजुद भी कहीं न कहीं आज भी हमारे बीच शेखर बैठा हुआ हैं। भीड़ में भी अकेलापन की अहसास ने हम सबको भीतर ही भीतर खोखला बना दिया हैं। सन १९४१ में रचित शेखर: एक जीवनी उपन्यास की यही एक खासियत हैं। आज इक्कीसवीं शदी में भी शेखर जैसे हजारों-करोड़ों शेखर हमारे बीच हैं। उपन्यासकार की गहन जीवनबोध और चिंतन परिपक्कता का यही आधार हैं जहाँ पाठक समुदाय पात्र के मूल संवेदना के साथ तादात्म्य स्थापित करने में सक्षम होते हैं। शेखर: एक जीवनी (पहला भाग) एक बाल मनोवैज्ञानिक उपन्यास हैं। जिसमें शेखर के शिशुकालीन अवस्था से लेकर यौवन अवस्था का वर्णन प्रस्तुत हैं। हर बालक की तरह उपन्यास के पात्र शेखर के मन में भी हर नई वस्तुओ के प्रति जिज्ञासाएँ हैं, कौतुहल हैं। वह उस सत्य की खोज करना चाहते हैं जिससे उसकी जिज्ञासाएँ शांत हो सके। जन्म, मृत्यु के भेद के रहस्य को जानने की प्रवल इच्छा शेखर में जागते हैं। बच्चे जन्म कैसे लेते हैं, कहाँ से आते हैं, बहन मांगा था भाई क्यों आया? इत्यादि, इत्यादि.....। मन में आये तरह तरह के सवाल का सटिक उत्तर मिले तो कहाँ से मिले? उपन्यास में उपन्यासकार ने शिशु मानस में आनेवाली तमाम भावनाओं को बड़ी ही दिलचप्स रूप से अभिव्यक्त क्या हैं, यथा-

> सरस्वती बोली- शेखर तुम्हारी एक और बहिन हो गयी हैं।
> बहिन? बहिनें भी होती हैं? शेखर ने पूछा, तुम्हारे जैसी?
> दुर पागल ! अभी तो इतनी छोटी हैं-पिद्दी-सी? जब बड़ी होगी –
> शेखर ने बड़े गंभीर स्वर में कहा, ' सरस्वती '।
> सरस्वती विस्मित-सी होकर बोली, ' क्या हैं? 'शेखर ने कभी उसे नाम लेकर नहीं बुलाया था।
> जो मैं पूछूँगा बताओगी? झूठ मत बताना, चाहे बताना मत।
> सरस्वती ने कुछ संदिग्ध स्वर मैं कहा, 'क्या?'
> शेखर बड़े प्रयास से कह पाया - बच्चे कैसे आते हैं?
> सरस्वती ने सहसा कोई उत्तर नहीं दिया।
>
> [शे.ए.जी. (पहला भाग) पृष्ठा-११९]

जन्म के जिज्ञासा के समान ही मृत्यु के रहस्य के प्रति भी शेखर में जिज्ञासा हैं, यथा-

> शेखर ने सरस्वती से पूछा - मरते कैसे हैं?
> मर जाते हैं और क्या?
> मरकर क्या होता हैं?
> पागल! जान नहीं रहती, चल-फिर बोल नहीं सकते, तब ले जाकर जला देते हैं।
> डूबने से ऐसे ही मर जाते हैं?
> हाँ।
> क्यों मरते हैं?
> साँस बन्द हो जाती है, तब जान निकल जाती है।
> जान क्या होती है?
> होती है बस।
> उसने फिर आग्रह किया, ' क्या होती है? '
> मुझे नहीं मालूम, पिताजी से पूछो!
> थोड़ी देर बाद शेखर ने फिर पूछा - जान आती कहाँ से है?
> ईश्वर से।
> जाती कहाँ है?
> ईश्वर के पास।
> ईश्वर ले लेता है?
> हाँ।
>
> [शे.ए.जी.(पहला भाग) पृष्ठा-६९]

आज कल के बच्चे ज्यादा वास्तववादी हैं। उन्हें युँहि फुसलाया जाना आसान नहीं

होता। हर वस्तुओं को वे आखों के सामने देखना पसंद करते हैं। अदृश्य वस्तुओं के प्रति जिज्ञासा तो हैं पर उनकी जिज्ञासाओं का अगर सटिक उत्तर न मिले तो उसके प्रति युक्तिसंगत तर्क देना देखा जाता है। शेखर एक ऐसा ही बालक है, उसे ईश्वर के बारे में जानना है। ईश्वर है तो कहाँ है? वह सामने क्यों प्रकट नहीं होता? उनकी हर जिज्ञासा में ईश्वर खड़ा होता है बाधक के रूप में। अतः बालक के मन में ईश्वर के प्रति प्रबल विद्रोह जाग उठता है, यथा-

"मैं ईश्वर को नहीं मानता ! मैं प्रार्थना भी नहीं मानता ! भवानी झूठी है। ईश्वर झूठा है। ईश्वर नहीं है।"

[शे.ए.जी. (पहला भाग) पृष्ठा-७७]

दुनिया में ऐसा कौन सा बालक है जो उत्तरदायित्व की भावना से अपने आपको गर्व का अनुभव न किया हो। कम से कम उसी समय जब उम्र के हिसाव से कोई बड़ा काम उसे सौंपा जाता हो। शेखर के शिशु मन में भी अहं भावना का प्रस्फुटन तब होता है जब उसे बड़े भाई के इलाज के लिए डॉक्टर को बुला लाने का उत्तरदायित्व सौंपा जाता है। जीवन को परिचालित करनेवाली ये अहं भावना दराचलत: व्यकित की मूल संवेदना शक्ति है । उपन्यासकार ने बालक के उन मनःस्थितियों का मनोवैज्ञानिक ढंग से आंकलन किया है। काम मिलने की प्रसन्नता से बालक शेखर अपनी उत्तरदायित्व की भावना को भूलकर सड़क पर स्थित लाल-लाल लेटरबॉक्स की ओर आकर्षित होकर स्वाभिमान भरे मन से उसी के ऊपर बैठकर स्वप्ने देखने लगे:

"वह संसार से एक लेटरबॉक्स की ऊँचाई भर ऊँचा है। अपने इस आसन से वह सारा संसार देखता है, उसकी क्षुद्रता पर हँसता है। तभी डाकिया-क्षद्र संसार का क्षुद्र डाकिया! आकर उसके स्वप्न को तोड़ देता है, उसे वहाँ से उतर जाने को कहता है, और उसके तत्काल न मानने पर झटक कर फिर कहता है.....तब हतवैभव शिशुसम्राट अपना बदला भी लेते हैं- कि उतरते समय डाकिये की उँगलियों पर ही गिरते हैं, उन्हें कुचल देते हैं, और भाग जाते हैं, घर पहुँचकर ही दम लेते हैं, और फूले हुए श्वास को शांत करते-करते अपने को विश्वास दिला देते हैं कि अब वे विजयी हैं।"

[शे.ए.जी. (पहला भाग) पृष्ठा-३७]

भय मनुष्य के जीवन की एक स्वाभाविक जन्मजात प्रवृत्ति हैं। चूँकि बालक के लिए भय की अनुभूति और भी डरावना होता है। जबतक उसे सत्य का अनुभव स्वंय प्राप्त न कर ले। बालक शेखर भी एकबार अजायवघर में भीमकाय बाघ को देखकर पहले तो डर जाते हैं पर जब उसे असलियत का पता चलता है तो वह वैसे ही एक नकली बाघ को चीरकर उसके भीतर भरे हुए घास-फूस को बिखेर देता है, तभी जाकर उसके भय भावना का शमन होता है।

"शिशु शेखर ने जाना, डर डरने से होता है, संसार की सब भयानक वस्तुएँ हैं. केवल एक घास-फूस से भरा निर्जीव चाम, जिससे डरना मूर्खता है।"

[शे.ए.जी. (पहला भाग) पृष्ठा-३८]

सृष्टि के अपार रहस्य के आगे विज्ञान भी नतमस्तक है। मनुष्य ईश्वर के सृष्टि की एक अनमोल उपहार है । बढ़ती उम्र के साथ शारीरिक अवयवों में वदलाव आना स्वाभाविक है। फ्रायड के मनोवैज्ञानिक सूत्र के आधार पर मनुष्य जन्म से ही तीन सहजात प्रवृत्तियों के द्वारा परिचालित होते हैं। अगर मनुष्य सामाजिक व्यवहार या अन्य दवाव के कारण इन प्रवृत्तियों को दमन करते हैं तो मनुष्य के ऊपर उसका बुरा असर पड़ने के साथ साथ व्यकित के मानसिक संतुलन बिगड़ने की भी संभावना बनी रहती है। ये तीन प्रवृत्तियाँ हैं- अहं, भय और सेक्स।

इस संदर्भ में हम डॉ.सत्यपाल सिंह के मत का उल्लेख इस प्रकार कर सकते हैं –

'उसे लेटरबॉक्स पर बैठकर दूसरों के पॉव को कुचलते हुए मानो बिजेता बनकर-भाग खड़ा होना उसकी अहं ही व्यक्त करता हैं, अजायबघर के नकली बाघ से भागना भय की प्रेरणा को निदर्शित करता हैं और किसी अनुचित वर्जित दृश्य को देखकर वैसे ही भावना का अनुभव करना उसकी काम प्रेरणा को '

[अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, डॉ.दुर्गा शंकर मिश्रा, पृष्ठा:२७७]

उपन्यासकार अज्ञेय ने शेखर: एक जीवनी उपन्यास के माध्यम से शिशु शेखर के मन में प्रस्फुटित यौन वासना को सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकित किया हैं । साधारणतः मध्यमवर्गीय परिवार में यौन भावना का खुले रूप में चर्चा नहीं होती है। शेखर भी मध्यमवर्गीय परिवार का सदस्य है,जिसके कारण शेखर के मन में यौन भावना के प्रति एकप्रकार तो जिज्ञासाएँ है दूसरी तरफ सामाजिक और पारिवारिक लोगों के दवाब के कारण खुले रूप से यौन भावना को जानने का मौका नहीं मिल पाते हैं। सरस्वती शेखर की बड़ी बहन ही नहीं है, वह तो बचपन के साथी, शेखर के अकेलापन के संगी है। एक वही तो है जो शेखर को समझता है, उसके मन की बात को बिना किसी संकोच से सरस्वती से पुँछ सकता है। शेखर सरस्वती से बहुत कुछ जानकारी तो प्राप्त कर लेते हैं और बाकी सारी बातों को जानने के लिए वह पिता के अलमारी में बंद यौन गंधी किताबों के सहारे सेक्स सम्बन्धी सारी बातों की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। दुनिया शेखर के सामने ख़ुल जाते हैं, तभी माता-पिता के एक दूसरे के प्रति व्यवहार की जानकारी भी उसे प्राप्त हो जाते हैं।

शेखर ने रोमाँ रोलाँ का यह वाक्य पढ़ा कि "सत्य उनके लिए है जिनमें उसे सह लेने की शक्ति है" उस दिन उसने सिर उठाकर देखा कि वह समुद्र पार कर आया है, कि वह सम्पूर्ण है, मुक्त है, और पुरुष है।

[शे.ए.जी. (पहला भाग) पृष्ठा-१७७]

वर्तमान समय के भागदौड़ भरी जिंदेगी में माता-पिता और बच्चों के रिश्तों में काफी दूरिया आ गयी है। बच्चे बहुत तनावों में रहतें हैं। अपनी मन की बातों को खुले रूप में प्रकट न कर पाने के कारण या दवाबों के कारण बच्चे असामाजिक कार्य में प्रवृत्त होते दिखाई देते हैं। अज्ञेय कृत शेखर:एक जीवनी उपन्यास में उपन्यासकार ने माता-पिता के व्यवहार का बच्चों के ऊपर कैसा असर पड़ सकता है उसका भी जिक्र यहाँ किया है। उपन्यास के मुख्य पात्र शेखर कभी भी अपने माँ को अपना नहीं पाए। माँ का अपने बेटे के प्रति अविश्वास की भावना ने शेखर को माँ से कोसों दूर ले गया वल्कि माँ की अंतिम बिदाई के समय में शेखर उपस्थित होने की न्यूनतम क्स्ट भी नहीं उठा पाए और सबसे बड़ी बात पात्र में उसके दवारा किये गए कार्य के प्रति अपनी पूरी जिंदेगी में कभी भी कोई पश्चाताव की भावना भी नहीं दिखाया गया है। शेखर के शब्दों में-

"अविश्वसनीय होने से कुत्ता,चूहा, दुर्गन्धित कृमि - कीट होना अच्छा है।"

[शे.ए.जी. (पहला भाग) पृष्ठा-१६६]

शेखर का माँ के प्रति प्रवल घृणा भावना एक ओर अन्य स्थल पर इसप्रकार अभिव्यक्त होता है-

"माँ का कोई काम नहीं करूँगा, कोई काम नहीं करूँगा, जिसमें कि उसे बाध्य होकर भी मेरा रत्ती-भी विश्वास करना पड़े, उससे बोलूँगा ही नहीं, कभी कोई पूछेगा तो भी कहुँगा कि वह मेरी माँ ही नहीं है-"

[शे.ए.जी. (पहला भाग) पृष्ठा-१६६]

युगीन वातावरण का प्रभाव हर रचना में देखने को मिलता है। शेखर अपने समय के एक प्रतिनिधि पात्र हैं। शेखर:एक जीवनी उपन्यास में पात्रों में गांधीवाद का गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है। शेखर गांधीवाद से ही प्रभावित होकर 'स्वाधीन ओर बाधाहीन भारत' नाम से एक नाटक लिखे थे। उस समय गाँधी के आदर्श के प्रति आसक्त होना युग की मांग थी। विदेशी वस्तुओं के प्रति तीव्र घृणा की भावना, देशी वस्तुओं के प्रति लगाव, गाँधी का नारा उस समय के सभी लोगों को विशेषकर युवापीढ़ियों को गहरे रूप से प्रभावित किया था। अज्ञेय के पात्र शेखर भी इससे अलग नहीं है। देश को विदेशी के हाथों से बचाने के लिए राष्ट्रीय स्वंय सेवक के कार्य कर्ता के रूप में शेखर नियुक्त हुए थे और जेल का जीवन भी व्यतीत करना पड़ा था। आज आधुनिक और तकनीकी के युग में निश्चित रूप से हम बहुत प्रगति कर रहें हैं लेकिन कोई भी अपनी युगीन वातावरण के प्रभाव से मुक्त नहीं हो सकते। युग के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि वातावरण के प्रभाव हर एक प्राणी के ऊपर छाएँ हुए है। एक सफल उपन्यासकार की यह गहन जीवनबोध है कि उनके द्वारा अंकित किए गए पात्र हर युग के जीवंत पात्र के रूप में प्रतिविम्बित हो।

द्वितीय विश्वयुद्ध के फलस्वरूप मध्यमवर्गीय भारतीय समाज में सामाजिक जीवन के परिप्रेक्ष में बहुत कुछ बदलाव आए। सहज-सरल जीवन शैली में जीनेवाले लोगों की विचारधारा के स्थान पर संकुचित विचारधाराए पनपने लगे थे। उपन्यासकार ने उन स्थितियों को नजदीकी से देखा ही नहीं स्वंय उसके द्वारा आक्रांत थे। उपन्यासकार का जीवन दर्शन वस्तुतः शेखर पात्र के माध्यम से प्रतिविम्बित करने का प्रयास है। शेखर पारम्परिक समाज व्यवस्था से असंतुस्ट है। उसके प्रति वह घोर विद्रोह करते हैं। एक ब्राह्मण परिवार के सदस्य होकर भी शेखर ब्राह्मणों के लिए संरक्षित होस्टल को छोड़कर हरिजन सम्प्रदायों के लिए संरक्षित होस्टल में जाकर रहने के स्थिर सिद्धांत लेना उस समय के सामाजिक व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश को ही तो व्यक्त करता है। स्वाधीनता के इतने साल बीट जाने के बाद भी क्या हम सही अर्थ में समाज के वर्षो प्रचलित उन पुरानी मान्यताओं से मुक्त हो पाये हैं? क्या समाज में आज भी कू-रीतियाँ, वर्णवैषम्य, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, छुआछूत की भावनाओं ने लोगों को जकड़ कर नहीं रखा है? उच्च-नींच की भावना एक सामाजिक व्याधि है, जिससे पारम्परिक सदभावना को आघात पहुँचता है। निसंदेह आज हम सभी आधुनिक शिक्षित नागरिक है। जमाने के साथ साथ कदम मिलाते चलते हैं, फिर भी भारतीय समाज में आज भी सामाजिक ढाँचा में पूर्ण रूप में बदलाव नहीं हो पाए। जब समाज के लोगों के मानसिकता में बदलाव आएंगे तब समाज में सही अर्थ में हम स्वाधीन, स्वतंत्त, आधुनिक नागरिक के रूप में तभी हम विश्व में अपना अस्तित्व स्थापित कर पाएँगे।

निष्कर्ष

शेखर: एक जीवनी उपन्यास हिंदी उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में एक सफल आधुनिक शिशु मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। यह अपने युग के समय की सही दस्तावेज है। शेखर के माध्यम से उपन्यासकार ने जीवन को दुवारा जीने का प्रयास किया है। जीवन मूल्य के विघटन ने आज आधुनिक जीवन को पूर्ण रूप से विशृंखलित बना दिया है। उपन्यासकार ने शेखर पात्र के माध्यम से उसी का अन्वेषण करता है। जीवन के अंतिम पड़ाव में पहुँचकर वह फिर से अपने विगत जीवन का अवलोकन करते हैं। जैसे-जैसे शेखर पात्र के साथ पाठक आगे बढ़ते हैं उसके साथ का सम्बन्ध गंभीर होता चला जाता है। पात्र के साथ सहृदयता बढ़ता जाता है। ऐसा नहीं लगता है कि शेखर कोई उपन्यास के पात्र है, उसके जीवनानुभव दराचलत: हर आम बालक के जीवनानुभव है। अज्ञेय कृत शेखर:एक जीवनी उपन्यास की यही एक खासियत हैं कि उपन्यासकार ने पाठक को अपनी दृश्टिकोण से पात्र को परखने की खुली आजादी भी दे देते हैं। एक जागरूक उपन्यासकार होने के नाटे अज्ञेय ने उनके उपन्यास के पात्र के अंतर्दन्द, उलझन, दर्शन को इसप्रकार अभिव्यक्त किया है कि पाठक समुदाय उसके भीतर के सत्य को खोजने के लिए एकप्रकार की तीव्र जिज्ञासा का अनुभव करते हैं।

शेखर: एक जीवनी उपन्यास युग सापेक्ष है। युगानुरूप परिदृश्य में शेखर की प्रासंगिकता को नकार नहीं सकते हैं। शेखर:एक जीवनी उपन्यास जिस समय लिखा गया था उस समय भी प्रासंगिक थे और आज के समय में भी शेखर:एक जीवनी प्रासंगिक है। शेखर एक जीवंत पात्र है, इसलिए शेखर:एक जीवनी उपन्यास हिंदी साहित्य जगत के एक कालजयी उपन्यास है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अज्ञेय के समग्र उपन्यास साहित्य में से शेखर:एक जीवनी एक अन्यतम कृति है।दूसरी ओर अज्ञेय हिंदी जगत में केवल एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक अनुष्ठान है।

संदर्भ

1. अज्ञेय, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन, शेखर: एक जीवनी (१)१९४१ नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २००१.
2. मिश्र, डॉ. हितेंद्र कुमार.अज्ञेय के उपन्यास, संजय बुक सेंटर, २००९.
3. मिश्र, डॉ. दुर्गाशंकर. अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, विद्यामंदिर, २००५.
4. शर्मा,डॉ.रमेश चंद्र. हिंदी उपन्यास, भारत प्रकाशन मंदिर, १९८४.
5. तिवारी, डॉ. राम चंद्र. हिंदी उपन्यास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, २००६.